

## विष मुक्त खेती

भारतीय अर्थव्यवस्था हजारों वर्षों से एक उक्ति के अनुकूल रही है:

“ उत्तम कृषि माध्यम बान| करे चाकरी कुकर निदान| ”

अर्थात् हमारे समाज में सबसे उत्तम किए जाने वाला कार्य कृषि या खेती माना जाता था| व्यापार करना मध्यम दर्जे का कार्य था तथा नौकरी को सबसे हीन कार्य समझा जाता था जिसकी तुलना ऊपर के मुहावरे में कुत्ते से की गई है! जब तक यह उक्ति भारत पर लागू रही, तब तक भारत एक संपन्न देश रहा| प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है| आप इस व्याख्यान को श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं:

[https://docs.google.com/file/d/0B8n\\_36gK-KF4T3pnN3lSNFBoZkU/edit?usp=sharing](https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4T3pnN3lSNFBoZkU/edit?usp=sharing)



आज के हालातों की अगर हम बात करें तो पिछले 30-35 वर्षों में यह उक्ति उलटी हो गई है:

“उत्तम चाकरी माध्यम बाण| करे कृषि कुकर निदान!”

अर्थात् नौकरी करना अब सर्वश्रेष्ठ कार्य बन चुका है। हमारे अपने कृषि प्रधान देश में कृषि की दुर्दशा के पीछे कुछ कारण हैं जिनमें से सबसे बड़ा कारण यह है कि कृषि में खर्च तो बढ़ गए हैं परंतु आमदनी उतनी की उतनी ही है। आइए समझते हैं कुछ आंकड़ों की मदद से:

1. 1990-91 में यूरिया का पैकेट (50 किलो) 60-70/- का था और 2009 तक उसकी कीमत हो गई 270/- 50 kg!
2. 1990-91 में DAP 3-4/- किलो आता था और आज उसकी कीमत 25/- से अधिक है!

3. Single Super Phosphate जो कभी २/- किलो था आज उसकी कीमत २०/- किलो से अधिक है!
4. डीसल महँगा हो चुका है!
5. जंतुनाशक जो 400/- लीटर मिलता था, आज 16000/- लीटर से भी अधिक महँगा है।

वहीं किसान की आमदनी बढ़ी तो नहीं है परंतु खर्चों के विरुद्ध और कम अवश्य हो गई है। किसान की आमदनी का 60% हिस्सा रासायनिक जंतुनाशक-कीटनाशक खरीदने में तथा 20% हिस्सा अपने खर्चों में लगता है। इसका मतलब किसान अपनी आमदनी का 80% हिस्सा अपने लिए उपयोग में नहीं ला पाता। बचा आमदनी का 20% हिस्सा भी उसे एकदम नहीं मिल जाता। यह पैसा उसे मिलों और फैक्ट्रियों से 6 महीने या साल भर बाद मिलता है। इसी बीच अपनी तात्कालिक कृषि तथा निजी खर्चों की आपूर्ति के लिए उसे चक्रवर्ती ब्याज (Compound Interest) पर कर्ज उठाना पड़ता है! यह कर्ज न चुका पाने की सूरत में उसके घर की इज्जत नीलम कर दी जाती है और कर्जा फिर भी ज्यों का त्यों बना रहता है! ऐसे में किसान के सामने सिर्फ एक ही रास्ता बचता है – आत्महत्या! जिस कीटनाशक को वो खेत में डालने के लिए रखता है, उसी को पीकर वह अपने जीवन को त्याग कर देता है!

भारत में कृषि का सत्यानाश करने वाला एक अंग्रेजों द्वारा बनाया गया चलित कानून है जिसका नाम है – Agricultural Price Commission Act। इस कानून के अंतर्गत किसानों को अपनी फसल का दाम तय करने का अधिकार नहीं है। उनकी फसल का दाम सरकार तय करती है। इस कानून के तहत किसानों को खेत में किए गए श्रम का केवल 33% ही दिया जाता है। अर्थात् जो किसान साल भर खेत में मेहनत कर रहा है, उसे केवल 4 महीने के श्रम का ही दाम मिलता है। इसके अलावा इस श्रम का मूल्य भी अति अपमानजनक होता है जो 60-100/- से अधिक नहीं होता, प्रतिदिन का। 15/- का 100 ग्राम वाला साबुन खरीदने के लिए

एक किसान को 1.5 किलो अनाज बेचना पड़ेगा सरकार को, तब जाकर वह साबुन खरीदने लायक होगा! इतनी गिर गई है अनाज की कीमत रोज़मर्रा की अन्य चीज़ों के मुकाबले! सरकार किसानों से निम्नतम कीमत पर माल खरीद लेती है और फिर उसे सड़ाकर शराब और बीयर बनाने वाली विदेशी कंपनियों को बेचकर मुनाफ़ा कमाती रहती है। जहाँ तक बात है किसानों की तो उन्हें कीमत अदा की जाती है महीनों बाद! इतने नुकसान को देखते हुए धीरे धीरे किसान अब शहरों की ओर रुख कर रहे हैं मजदूरी के लिए। अभी हाल ही में एक फिल्म आई थी 'पीपली लाईव', उसमें जो किसान की दशा का वर्णन था, सच्चाई उससे भी कई गुणा भयानक है हमारे देश में!

भारत सरकार का एक उपक्रम, Indian Council of Agricultural Research and Development की रिपोर्ट के अनुसार 1950-51 में प्रति हेक्टेयर जमीन में 3 किलो रासायनिक खाद डाली जाती थी और जंतुनाशकों का उपयोग न के बराबर था। वहीं 2004-05 के आंकड़े बताते हैं कि भारत में प्रति हेक्टेयर जमीन पर 114 किलो रासायनिक खाद का इस्तेमाल हो रहा है और जंतुनाशक भी खूब धड़ल्ले से बिक रहे हैं! इसका सीधा सा मतलब है कि रासायनिक खाद के उपयोग के साथ-साथ कीड़ों की संख्या में भी बढ़ोतरी हो गई है। मिट्टी में मित्र और शत्रु - दो तरह के जीव होते हैं जो अपनी प्रकृति के अनुसार फसल को लाभ या हानि पहुँचाते हैं। रासायनिक खाद से मित्र जीव नष्ट हो जाते हैं और शत्रु जीवों की तादाद बढ़ जाती है। फिर इन शत्रु जीवों को मारने के लिए जंतुनाशक डाले जाते हैं जिससे इन दवाईयों को बनाने वाली कंपनियों को दुगुना मुनाफ़ा होता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि सरकार खुद इन रसायनों का उपयोग करने की सलाह किसानों को देती है और बड़े जोर लगाकर विज्ञापन भी देती है जो कि आप सबने टीवी पर भी देखा होगा। किसान भी सोचता है कि जब सरकार कह रही है तो जरूर इसमें कोई न कोई बात होगी और इस तरह वह फँस जाता है एक ऐसे दुष्चक्र में जो पहले जमीन, फिर किसान को और फिर अनाज खाने वाले को; तीनों को ही बर्बाद कर देता है! सरकार से एक छोटा सा ही सवाल

पूछा जाना चाहिए – जब ये रासायनिक खाद और कीटनाशक नहीं थे तो भारत की कृषि क्या पिछड़ी हुई थी? फिर जानबूझकर किए जाने वाले इस कुकृत्य से किसका फायदा हो रहा है?

आज हमारे देश में करोड़ों लोग कैंसर जैसी भयानक बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि हर साल इन बीमारियों पर होने वाला खर्च 7 लाख करोड़ रुपये है! यदि आप इनके मूल में जा कर देखें तो आप पाएँगे कि फलों, सब्जियों तथा अनाज के माध्यम से रासायनिक खाद तथा कीटनाशक ही इन बीमारियों के कारण हैं। एक आंकड़े के अनुसार एक भारतीय औसतन एक वर्ष में 1 किलो 700 ग्राम जहरीले रसायन खा जाता है जो कि ऐसी बीमारियाँ पैदा करने के लिए पर्याप्त है। इन रसायनों के लिए किसान प्रतिवर्ष 4 लाख 80 हजार करोड़ रुपये खर्च करता है तथा सरकार प्रति वर्ष इन रसायनों के लिए 1 लाख 30 हजार करोड़ रुपये की रियायत भी देती है। यदि आप इन तीनों को जोड़ लें तो यह करीब 13 लाख करोड़ रुपया बैठता है! इतना पैसा हर साल विदेशी कंपनियों को हम खिला डालते हैं क्योंकि 90% से अधिक रासायनिक खाद-कीटनाशक बनाने वाली कंपनियाँ विदेशी हैं जैसे Bayer, Reckitt and Beckinson, Park Davis आदि।

भोपाल गैस त्रासदी से तो आप सभी परिचित होंगे। Union Carbide नामक एक अमेरिकेन कंपनी भारत में रासायनिक कीटनाशक बनाया करती थी। उनके कारखाने से 40 मेट्रिक टन Methyl Isocyanate नाम की एक जहरीली गैस का रिसाव हो गया था जिससे एक ही रात में 3000 लोग तड़प तड़प कर मौत के आगोश में समा गए थे! सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस घटना में करीब 17000 लोग मारे गए थे और लगभग 1 लाख लोग हमेशा के लिए विकलांग हो गए थे! इस कंपनी का मालिक सबके सामने भारत से अमरीका फरार हो गया था। एक कीटनाशक जो भारत में सबसे अधिक प्रचलित है, उसका नाम है DDT। क्या आपको पता है कि यह रसायन दुनिया के 56 देशों में प्रतिबंधित है? कुछ देशों में

तो इसे बनाने और बेचने पर 20 साल के दंड का प्रावधान है परंतु भारत जैसे देश में इसका प्रचार स्वयं भारत सरकार द्वारा किया जाता है!

आपके मन में एक प्रश्न उठ रहा होगा कि आखिर ये कीटनाशक और रसायन इतने खतरनाक हैं तो इनका प्रयोग किसने आरम्भ किया? इसके पीछे की कहानी बहुत ही रोचक है। ये जानकर आपको आश्चर्य होगा कि जिन देशों में इन रासायनिक उत्पादों पर शोध हुआ, उन्होंने खुद इसे प्रयोग नहीं किया! द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात जब पश्चिमी देशों के पास रासायनिक हथियार बनाने की सामग्री का जखीरा इकट्ठा हो गया तो वहाँ शोध आरम्भ हुआ कि इस सामग्री का और कौन सा उपयोग किया जा सकता है। शोध में पता चला कि इस सामग्री का उपयोग रासायनिक खाद तथा कीटनाशकों के रूप में हो सकता है और इसे कृषि प्रधान देशों में बेचा जा सकता है। इस तरह न सिर्फ उनका यह रासायनिक भण्डार भी खत्म होगा, बल्कि मुनाफा भी बहुत शानदार होगा! वहाँ रासायनिक खाद तथा कीटनाशकों को बनाने की फक्ट्रियां डल गईं और रुख हुआ भारत जैसे देशों की ओर जो कृषि प्रधान थे। भारत के नेताओं को फाँसा गया, खरीदा गया और रास्ता खोला गया इन रासायनिक हथियारों से बने खाद-कीटनाशकों को बेचने का। आरम्भ में भारतीय किसान इन रसायनों का इस्तेमाल नहीं करते थे। इनकी बिक्री तथा विदेशी चाटुकारिता की सुरक्षा हेतु भारत सरकार ने एक विभाग बनाया जिसका नाम है खंड विकास विभाग (Block Development Department) और एक अधिकारी को नियुक्त किया गया जिसको BDO (Block Development Officer) कहा जाता है। इस अधिकारी का काम यह है कि जहरीले कीटनाशक और खाद के लिए किसानों को फांसना! जिस तरह शराब पीने से शरीर में विकार और लत दोनों पैदा हो जाते हैं, ठीक उसी प्रकार इन जहरीले रसायनों से जमीन में भी विकार और लत दोनों पैदा हो जाते हैं। फिर सिलसिला शुरू होता है खपत का क्योंकि इन रसायनों ने मिट्टी को इतना प्रदूषित कर दिया है कि अब अच्छी पैदावार के लिए रासायनिक खाद एक

प्राथमिकता बन गई है! इस खाद के प्रयोग से कीड़ों की भरमार होने लगी और कीटनाशकों का भी उपयोग बढ़ने लगा।

क्या आपको पता है, रासायनिक खाद का केवल 2% हिस्सा ही उपयोग हो पाता है तथा 98% हिस्सा हवा, पानी और मिट्टी में मिलकर रह जाता है? AIIMS के एक शोध के अनुसार DDT, महिलाओं के दूध में पाया गया। फलों, सब्जियों, दूध तथा पानी के माध्यम से हमारे शरीर में विषैले कीटनाशक तथा खाद प्रवेश कर जाते हैं।

केरल में एक गाँव है पढरे, जहाँ काजू की खेती की जाती है। उस गाँव में पिछले 20 वर्षों से Endosulphan नामक कीटनाशक हेलिकॉप्टर की सहायता से काजू की फसल पर छिड़काया जाता रहा क्योंकि काजू की फसल पर बहुत कीड़े लगते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उस गाँव में पिछले 20 सालों में एक भी बच्चा पैदा नहीं हुआ! ICMR (Indian Council of Medical Research) के डॉक्टर मोहन कुमार और उनकी टीम ने जब एक शोध किया तो पाया गया कि वहाँ हर घर में दूसरा या तीसरा व्यक्ति कैंसर से भी पीड़ित है तथा वहाँ neurological disorders या बौद्धिक अक्षमता सबसे अधिक है। जब वहाँ के लोगों के खून की जाँच की गई तो पता चला कि उन सबके रक्त में Endosulphan, एक व्यक्ति के द्वारा सहन करने की मात्रा से 40 गुणा अधिक है! इस मात्रा का ही दुष्परिणाम है कि वहाँ के लोग अब संतानोत्पत्ति के योग्य नहीं रह गए हैं! यह सिर्फ एक गांव की कहानी नहीं है, भारत में ऐसे सैकड़ों गांव हैं जो आर्थिक और शारीरिक रूप से इन विषैले खाद तथा कीटनाशकों से पीड़ित हैं।

विषैली मिट्टी को बचाने का अब केवल एक ही उपाय है और वो है जैविक खेती। वैज्ञानिकों का मानना है कि जमीन में घुला DDT जब पशुओं के शरीर में जाता है तो वे संतान उत्पन्न करने की क्षमता खो देते हैं। ऐसे पशुओं को फिर किसान

कसाइयों को बेच देते हैं क्योंकि ये जानवर उसके किसी काम के नहीं रहते। इस तरह भारत में प्रतिवर्ष 4 करोड़ से अधिक जानवर काट दिए जाते हैं! यदि इन्हीं जानवरों के मल मूत्र को खेत में 3 साल लगातार डाला जाए तो जमीन और जल दोनों से जहर बाहर निकाल जाएगा! यह अब वैज्ञानिकों द्वारा भी शोध करके सिद्ध किया जा चुका है। इसी के साथ साथ पैदावार भी 20% से लेकर 200% तक बढ़ जाती है!

किसी भी अच्छी फसल के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटक है सौर प्रकाश। इसके बाद दूसरा महत्वपूर्ण घटक है मिट्टी के पोषक तत्व। मिट्टी में Micro तथा Macro पोषक तत्व होते हैं जो फसल में जाने के बाद मिट्टी में क्षीण हो जाते हैं। मिट्टी में इनकी पुनर्स्थापना के लिए मिट्टी में खाद का प्रयोग किया जाता है। रासायनिक खाद में केवल NPK (Nitrogen, Phosphorus तथा Potash) होता है; Copper, Cobalt, Calcium, Sulphur जैसे और भी कई महत्वपूर्ण पोषक तत्व इसमें नहीं होते! वहीं प्रकृति ने ये सारे पोषक तत्व बड़े जानवरों जैसे गाय, भैंस, बैल के मॉल-मूत्र में प्रचुर मात्रा में दिए हैं। आपने भी देखा होगा कि जहर से उगाई गई फल और सब्जियाँ, जैविक फल और सब्जियों की तुलना में काफी सस्ते होते हैं। इसके पीछे यही वजह है कि उनमें पोषक तत्व कम होते हैं तथा खाने के बाद जानलेवा बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है! कमाल की बात तो यह है कि जैविक खेती की पैदावार केवल बिकने में महुँगी है, लागत में बहुत ही कम अथवा न के बराबर है!

1 एकड़ भूमि के लिए जैविक खेती तैयार करने हेतु आपको चाहिए किसी भी बड़े जानवर जैसे गाय, बैल, भैंस का 15 किलो गोबर, 15 किलो मूत्र, 1 किलो दाल का आटा (चना, मसूर, मूँग आदि), 1 किलो पुराना खराब गुड़ जो खाया न जा सके, 150-200 लीटर पानी तथा किसी पुराने बड़े वृक्ष के आस पास की 2-3 किलो मिट्टी। इन सबके मिश्रण को 15 दिनों के लिए ढककर रख दें। प्रतिदिन इसे हिलाते रहें। 15 दिनों के बाद यदि खेत में फसल नहीं है तो इस मिश्रण को छिड़क



दें और यदि खेत में फसल है तो पानी देते समय इस मिश्रण को पानी के साथ मिला दें। इसे लगातार डालते रहें और फिर देखें पैदावार में बढ़ोतरी और मिट्टी से विषैले तत्वों की सफाई! यह प्रक्रिया प्रति 21 दिनों में दोहराते रहें। 3 वर्ष पश्चात, जमीन से सारा जहर खत्म हो जाएगा!

जैविक कीटनाशक तैयार करने के लिए 20 लीटर बड़े जानवर (गाय, बैल, भैंस) का मूत्र, 2.5 किलो नीम के पते या निबौरी की चटनी, 2.5 किलो आहू के पत्तों की चटनी, 2.5 किलो सीताफल-अर्क मदार या आकड़े के पते, 2.5 किलो धतूरे के पते; इन सबकी चटनी तथा 500-750 ग्राम तम्बाकू के मिश्रण को उबाल लें। इसे ठंडा करके रख लें। इसको डालने के लिए जितनी मात्रा में कीटनाशक चाहिए हो, उससे 20 गुणा अधिक जल मिला लें। इसे छिड़कने के 48-72 बाद आपको अपनी फसल से सारे कीड़े साफ मिलेंगे!

बीजों को भी संस्कारित करके बोना चाहिए ताकि पैदावार और अच्छी हो सके। इसके लिए 1 किलो गाय-भैंस के गोबर में 1 किलो गाय-भैंस का मूत्र तथा 100 ग्राम कलई या पुताई वाला चूना मिला लें। इस घोल में 1 किलो बीज डाल कर 6-8 घंटों के लिए रख दें। अब बीज को निकालकर छायादार जगह पर सुखा लें। तैयार हो गया संस्कारित बीज! इस बीज की खासियत यह है कि इस पर कीड़ा जल्दी नहीं लगता और पैदावार की गुणवत्ता और भी ज्यादा निखर जाती है!

अच्छी पैदावार के लिए मिश्रित खेती करनी चाहिए, जैसे कपास की फसल के साथ तूअर की फसल आदि। इससे होता यह है कि जिस फसल को जो पोषक तत्व चाहिए होता है, उसकी कमी दूसरी फसल पूरी कर देती है। खेत को गोबर और गोमूत्र देने से पानी की आवश्यकता भी कम हो जाती है। जहरीली खाद जितना पानी मांगती है, जैविक खेती को उससे आधे पानी की भी आवश्यकता नहीं होती! इस तरह से जल का भी संरक्षण हो जाता है। खरपतवार भी जैविक

खेती में कम उगती हैं। केवल 10% खर्चे में ही खेती हो जाती है। इस तरह जैविक खेती से 900% तक मुनाफा कमाया जा सकता है, जरूरत है तो केवल प्रकृति द्वारा दिए गए उपहार का सम्मान करने की!

--इति--